सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 अगस्त)

नीतिवचन 18:21 जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं।

अकेली जीभ का प्रभाव हमारे अन्य सभी अंगों को मिलाकर भी ज्यादा होता है: और इसलिए, प्रभु के लोगों के नश्वर शरीर और इससे सम्बंधित सेवा कार्यों में जो प्रभु के लिये किये जाते हैं, इस जीभ को नियंत्रित करके प्रभु की सेवा में लगाए रखना, प्रभु के लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। प्रेम, भलाई, सहायता के कुछ शब्दों ने -- कितनी बार मानवीय जीवन के पुरे मार्ग को बदल डाला है! जी हाँ, इन शब्दों का उपयोग कितनी बार देशों के भाग्य को ढालने में कितना प्रभावपूर्ण रहा है! और कितनी बार बुरे शब्दों, निर्दयी शब्दों, निंदनीय शब्दों, ने घोर अन्याय किया है, प्रतिष्ठा की हत्या की है, आदि! या जैसा की प्रेरित याकूब 3:6 वचनों में बताते हैं, कि, "जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और जीवन गति में आग लगा देती है, और नरक कुंड की आग से जलती रहती है " - यदि बिना सोचे जीभ का उपयोग किया जाये तो यह जीभ जुनून, आवारगी, दुश्मनी जगाती है। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि, वैसी बुरे शब्द बोलने वाली जीभों के लिए केवल नरक कुंड की आग यानि दूसरी मौत है! Z.'99-75 R2447:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 अगस्त)

भजन संहिता 95:6 आओ हम झुककर दण्डवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें!

हमारा निर्णय यह है कि, प्रार्थना के बिना या इससे अधिक, प्रार्थना में नियमितता के बिना - या हम लगभग यह कहना पसंद करेंगे, कि प्रार्थना में घुटने टेके बिना, किसी भी मसीही के लिए जीवन में एक उचित, निरंतर चाल चलना और इस तरह के एक चरित्र और विश्वास संरचना का निर्माण करना, जैसा कि प्रेरितों द्वारा "सोने, चांदी और कीमती पत्थरों," के रूप में प्रस्तुत किया गया है, असंभव है; और हमारा मानना है कि, अब तक जितने भी प्रभु के सबसे सच्चे और श्रेष्ठ लोग जीवित रहे हैं, उनके जीवन के अनुभवों और गवाहियों के द्वारा भी इस बात की पुष्टि होगी कि, प्रार्थना करना हमारे आत्मिक जीवन की उन्नति के लिये कितना जरूरी है। Z.'99-184 R2501:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 अगस्त)

एज्रा 10:11 इस देश के लोगों से न्यारे हो जाओ।

किसी ने ठीक कहा है: इस संसार में मसीही का होना, समुद्र में जहाज के होने की तरह है। समुद्र में जहाज तब तक सुरक्षित है, जब तक की समुद्र

का पानी जहाज में न आ जाये। आज के समय में ईसाईयों के साथ एक सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि, इन्होनें अजनबियों को, "देश के लोगों को", अपने में शामिल कर लिया है, और उन्हें इसाई के रूप में पहचानने लगे हैं। इससे न केवल ईसाईयों की हानि होती है, उनके स्तर को नीचा कर देने की वजह से (क्योंकि औसत दर्जे को स्तर मान लिया जाता है), बल्कि उन "अजनबियों" की भी हानि होती है, क्योंकि इस तरह से ऊपरी तौर पर इसाई बनकर उनमें से कई खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं और वे सोचने लगते हैं की उन्हें किसी बदलाव की जरूरत नहीं है, क्योंकि बाहरी तौर पर उन्हें सम्मान मिलता है, और संभवतः कई बार वे सार्वजनिक आराधनाओं में उपस्थित रहते हैं। Z.'99-203 R2512:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 अगस्त)

2 तीमुथियुस 2:24,25 प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो। वह विरोधियों को नम्रता से समझाए।

परमेश्वर के कुछ प्रिय लोग जब दूसरों के साथ, खासकर पढ़े लिखे लोगों के साथ सच्चाई बाँटते हैं, तब वे सच्चाई को बहुत बड़ी चोट पहुँचा सकते हैं, यदि वे इसे आत्म विश्वास और अपनी ओर से दूसरों को ढांढस दिलाकर

बाँटे। विनम्रता एक गहना है जहाँ भी पाया जाए, और विशेष रूप से विनम्रता सत्य के लिए सहायक और गुलेल के रूप में वांछनीय है। हमें सच्चाई को पूरे वेग के साथ दूसरों तक लेकर जाना है, लेकिन इसे बाँटना, पूरी विनम्रता से है; और इस सच्चाई को यदि हम सवाल के रूप में सुझाव देने के लिए बाँटे, तो इसे अक्सर सबसे ज्यादा प्रभावकारी पाया गया है। Z.'00-14 R2559:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 अगस्त)

रोमियों 8:28 हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

परमेश्वर के सभी लोगों को ऊपर के इस वचन को याद रखते हुए संतुष्ट रहना है; जो परमेश्वर ने उनके लिए दुःख और पीड़ा देने का निश्चय किया है, उसके खिलाफ शिकायत नहीं करनी है -- उन्हें आलसी नहीं होना है, बल्कि संतुष्टि दिखानी है, ये सोचते हुए की जो परमेश्वर की सेवा उनके हाथ में हैं वे उसे कर सकें -- बिना बेचैन हुए, बिना चिड़चिड़ाहट के, बिना असंतुष्ट और परमेश्वर और उनके दिव्य प्रावधान के प्रति बिना शिकायत किये। क्योंकि हो सकता है, अनुभवों के द्वारा परमेश्वर हमें अपने किसी

ख़ास कार्य के लिए तैयार कर रहे हों और जो अनुभव की अनुमति परमेश्वर ने दी है, सिर्फ वही हमें परमेश्वर के उस ख़ास कार्य करने के लिए हमें तैयार करेगा...हमें यह भी याद रखना है कि हम अपनी कमियों का न्याय करने में अयोग्य हैं और इस तरह से हमारे लिए कौन से अनुभव मददगार होंगे उसको चुनने में भी हम अयोग्य हैं। Z.'00-22 R2562:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 अगस्त)

याकूब 4:7 इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

यदि हम लालसाओं का विरोध करने में सकारात्मक हों, तो यह हमारे चरित्र की मजबूती को बढ़ाता है, ना ही सिर्फ उस समय, बल्कि आने वाली और लालसाओं में भी जो हमको आएगी; और यह हमारे शत्रु शैतान को भी कुछ हद तक असंतुष्ट करता है, जो हमारे सकारात्मक विचार पर ध्यान देते हुए, जान जाता है कि, इसके साथ लालसाओं का जिक्र करने का कोई लाभ नहीं है क्योंकि इसका चरित्र बहुत सकारात्मक है और यह दृढ़ निश्चयी है; जबकि यदि उन लालसाओं पर थोड़ा विचार किया जाता खुद से सवाल करके की इसका विरोध करें या नहीं, तो परिणाम निश्चित रूप से और कारणों और तर्कों पर आगे बढ़ जाता जो की शैतान हमारे

विचारों में डालता, और हमारे लिये यह खतरा होता कि हम शैतान के तर्कों के सामने कमज़ोर पड़ जाते और लालसाओं के काबू में आ जाते, क्योंकि, जैसा की प्रेरित घोषणा करते हैं, 2 कुरिन्थियों 2:11 वचन में, शैतान बहुत चतुर शत्रु है, और "हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं"। प्रभु के वचन और आत्मा के प्रति शीघ्रता से और सकारात्मक आज्ञाकारिता ही "भाइयों" में से किसी के लिए भी एकमात्र सुरक्षित मार्ग है। Z.'00-30 R2567:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 अगस्त)

2 तीमुथियुस 2:5 फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।

प्रभु यीशु ने परमेश्वर के समय और ऋतुओं और विधियों को देखा और उसका अनुकरण किया। उन्होंने कभी भी अपने जीवन को लापरवाही से, जैसा की भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, वचनों के अध्यन्न के द्वारा उन्होंने जाना, कभी भी अपने जीवन को जब तक वह घण्टा नहीं आया, उनके दुश्मनों के हाथों में अपने आप को नहीं दिया। उन्होंने दूसरों के सामने गलियों में लम्बी प्रार्थना नहीं की, ताकि दूसरे लोग उसको सुनें, और न ही हल्ला-गुल्ला करके भीड़ को उकसाया; जैसा की यशायाह भविष्यद्वक्ता

ने यशायाह 42:2 वचन में कहा है, "न वह चिल्लाएगा और न ऊंचे शब्द से बोलेगा, न सड़क में अपनी वाणी सुनायेगा।" उन्होंने परमेश्वर के तरीकों को चुना, जो तर्कसंगत और बुद्धि से युक्त है, और जो तरीका लोगों के बीच में से, उस वर्ग का चयन करने में प्रभावकारी है, जिनको परमेश्वर वादा किये गए राज्य का वारिस बनाना चाहते हैं। आइये वे लोग जो दौड़ रहे हैं, वे वैसा दौड़ें कि इनाम को पा सकें, हमारे स्वामी के पदचिन्हों पर ध्यान से चलें, और ज्यादा से ज्यादा उनकी पवित्र आत्मा से भर जाएँ। Z.'02-265 R3070:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 अगस्त)

लूका 10:5, 6 जिस किसी घर में जाओ,पहले कहो, 'इस घर पर कल्याण हो'। यदि वहां कोई कल्याण के योग्य होगा, तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगा।

अभी के कटनी में उपस्थित हर एक मजदूर को प्रभु के आदेश को जो की ऊपर के वचन में बताया गया है, उस पर अच्छे से ध्यान देना चाहिए। जहाँ कहीं भी प्रभु के प्रतिनिधि जाते हैं, उनके साथ शान्ति जानी चाहिए, बैरभाव, गड़बड़ी, हलचल, बहस, आदि नहीं जानी चाहिए। यह सत्य है कि, यह सच्चाई एक तलवार की तरह है जो हमारे प्रति विरोधियों को खड़ा

करेगी, फिर भी यह सत्य होना चाहिए जिसको विरोध और बटवारा करना चाहिए, न की प्रभु के प्रतिनिधियों की और से कोई रूखापन या अभद्र शब्द या क्रियाएं। अभी की इस व्यस्त दुनिया में बहुत सारी चीज़ें हैं जो मनुष्य को भड़काती हैं, और जिन्होंने इस सत्य को पाया है, उन्होंने इस सत्य की आत्मा को भी पाया है, इसलिये "प्रभु यीशु मसीह के द्वारा शान्ति से बात करें"। Z.'04-108 R3347:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 अगस्त)

मत्ती 6:23 इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा।

"कटनी", "गेहुँओं" को फटकने का समय है - फटकने यानि अलग करने का समय, और इस समय में हममें से हर एक को अपने चरित्र को साबित करना है: "सब कुछ पूरा करके, स्थिर रहो"! इस "कटनी" की परीक्षाएं भी अवश्य यहुदिओं के युग की या छाया की "कटनी" की परीक्षाओं की तरह होगी! इन परीक्षाओं में से एक **क्रूस** है, दूसरा मसीह की **उपस्थिति** है, एक और **नम्रता** है, कोई और **प्रेम** है। यहूदियों को फटकारा गया था, क्योंकि उन्होंने "उस अवसर को जब उनपर कृपा दृष्टि की गई थी, नहीं पहचाना"। यह मामला उन लोगों के लिए दोहरा चिंताजनक है जिन्होंने एक बार

वर्तमान सत्य के प्रकाश को देखा है, और बाद में "बाहरी अंधकार" में चले जाते हैं। यह अविश्वसनीयता को दर्शाता है। Z.'04-297 R3437:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 अगस्त)

फिलिप्पियों 2:1,2 अतः यदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करूणा और दया है, तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।

इस वचन में एकता, शांति, भाईचारे के लिए कितना अच्छा प्रोत्साहन है! वे हमें कैसे धैर्य, संयम, सौम्यता, सहायकता और कलीसिया में एक दूसरे को ढाढ़स देने का सुझाव देते हैं; ताकि इस प्रकार से सभी में प्रभु की आत्मा की बढ़ोतरी हो पाए, ताकि हर एक सही तरीके से सबसे बड़ी संभव प्रगति कर सके। प्रिय भाइयों और बहनों, आइये हम ज्यादा से ज्यादा बरनबास के नाम को पाने के योग्य बन पायें, जिसे भाइयों को ढाढ़स और प्रोत्साहन देनेवाला कहा जाता था। आइये हमारे पास अधिक से अधिक मात्रा में पवित्र आत्मा बढ़ती रहे और बनी रहे, क्योंकि यही प्रभु को भाता है; ताकि प्रचुर मात्रा में हममें पवित्र आत्मा होने से हम सब भी सिय्योन में ढाढ़स देनेवाले बेटे और बेटियाँ बन सकें, हमारे पिता के प्रतिनिधि बन

सकें, पवित्र आत्मा का माध्यम बन सकें, साथ ही साथ सत्य का माध्यम बन सकें। Z.'04- 296 R3436:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 अगस्त)

प्रकाशित वाक्य 2:10 प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।

हम सच्ची कलीसिया (नाममात्र के ईसाईयों के चर्च प्रणाली पर नहीं) पर एक दूसरे हमले की आशंका करते हैं, और इसका मतलब यह हो सकता है, जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के साथ हुआ था, एक दूसरा हमला होगा, जो कि देखने में ऐसा लगेगा की, बेबीलोन की स्त्री और उसकी वेश्याओं यानि की संसार की, शरीर में मसीह की देह के विश्वासी सदस्यों के ऊपर पूरी विजय हो गयी हो। यदि इस मामले का परिणाम ऐसा हो तो निश्चय हमें अचम्भा नहीं करना है; लेकिन ये अनुभव और बाकी सभी बातें मिलकर उनके लिये भलाई ही को उत्पन्न करेंगी, जो प्रभु से प्रेम करते हैं। पर्दे के उस पार का स्वर्गीय इनाम जीतने के लिये हमारा मरना जरुरी है। पर्दे के इस पार के एलिय्याह के समूह के लोगों का परास्त होना आवश्यक है और वे परास्त होंगे भी, लेकिन अभी के समय में दिखने

वाली यह हार राज्य की महिमाओं को शीघ्रता से नजदीक ला देती है। Z.'04-63 R3326:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 अगस्त)

भजन संहिता 19:12-14 मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर। तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं.... मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले!

ऐसा लगता है कि प्रत्येक बुद्धिमान मसीही परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी इस प्रार्थना को निरंतर करेगा, गुप्त पापों से पवित्र होने के लिए, ताकि वह ढिठाई के पापों से भी बचा रहे; और इस प्रकार से हृदय से प्रार्थना करते हुए, आवश्यकता के हर समय अनुग्रह के फव्वारे के पास निरंतर जाकर, वह पाप की शुरुआत के प्रति सचेत रहेगा और अपने हृदय को साफ और शुद्ध अवस्था में रख पायेगा। वह जो केवल बाहरी या ढिठाई के पापों की रक्षा करके पवित्रता का और प्रभु के निकट रहने का जीवन जीने का प्रयास करता है, और जो अपने मन के रहस्यों में पाप की शुरुआत की उपेक्षा करता है, वह एक बहुत मूर्खतापूर्ण और अनुचित तरीके से सही बात का प्रयास कर रहा है। Z.'98-22 R2249:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 अगस्त)

2 कुरिन्थियों 5:20 इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं।

यदि हम मसीही के रूप में, ऊपर के वचन के द्वारा जो विचार व्यक्त किया गया है, उसे हर समय अपने मन में याद रखें, तो ये हमारे चरित्र को कितनी प्रतिष्ठा देगा! क्या बदलने वाली सामर्थ्य है इस वचन में! हमारे नए स्वभाव को कितनी सहायता मिलती है, इसके युद्ध में जो वह हमारे गिरे और गिड़गिड़ाते हुए पुराने स्वभाव से लड़ता है, जो हमारा नहीं है, पर जिसको हम मरा हुआ मानते हैं! प्रेरित कहते हैं कि, "हमारी नागरिकता स्वर्ग की है" ... भले ही हम इस दुनिया में रह रहे हैं, पर हम इस दुनिया के नहीं हैं, बल्कि हमारी नागरिकता और वफादारी स्वर्गीय राज्य के प्रति बदल गई है ... और अब, परमेश्वर के राज्य के लिये नियुक्त व्यक्ति के रूप में, भले ही अभी भी हम इस दुनिया में अजनबी और परदेशी बनकर रह रहें हों, हमें मसीह के राजदूत और परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में इस पद की प्रतिष्ठा और आदर को महसूस करना है और इस पद से जुडी भारी जिम्मेदारियों को भी महसूस करना है, और हर समय प्रेरित के इस वचन, कुलुस्सियों 3:17 को भी याद रखना है, "वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो"। Z.'04-72 R3330:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 अगस्त)

मत्ती 10:25 चेले का गुरू के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घर वालों को क्या कुछ न कहेंगे!

भले ही कितनी ही कोमलता और अनुग्रह के साथ वर्णन किया जाए, सच्चाई एक तलवार है जो हर दिशा में प्रवेश करती है, और जैसा की प्रभु यीशु मसीह ने कहा है, की यह सच्चाई अक्सर माता-पिता को बच्चों से अलग करती है और बच्चों को माता-पिता से अलग करती है, क्योंकि अन्धकार को रोशनी से नफ़रत है और वह इस रोशनी का विरोध हर सम्भव तरीके से करती है...इस विषय के बारे में प्रभु की शिक्षाओं के मद्देनजर, और यह जानते हुए की सत्य की सबसे बुद्धिमान प्रस्तुति को भी अंततः कैसे गलत समझा जा सकता है, यह हर उस व्यक्ति के लिये लाभदायक होगा जो सच्चाई की सेवा पूरी वफ़ादारी से करता है, कि वह जितना संभव हो उतना सावधान होकर सत्य को प्रस्तुत करे ताकि उसे गलत न समझा जाए; - वह यह स्पष्ट रूप से समझाने की कोशिश करे कि, हम किसी भी प्रकार की अराजकता की न तो वकालत नहीं करते हैं और न ही उसमें भाग लेते हैं; बल्कि इसके विपरीत हम, धार्मिकता और सभी व्यवस्थाओं में से उच्चतम व्यवस्था यानि दिव्य व्यवस्था के लिये खड़े हैं। Z.'03-13 R3131:3, 5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 अगस्त)

1 थिस्सलुनीकियों 5:14 हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं कि जो ठीक चाल नहीं चलते उनको समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।

यह वचन ऐसा सूचित करता हुआ प्रतीत होता है कि प्रभु के लोगों के बीच जो बेहतर रूप से संतुलित हैं, उनको न ही केवल कमजोर भाइयों और जिनके अन्दर साहस की कमी है, उनके प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए बल्कि सबके प्रति ऐसा करना चाहिए और धीरज के साथ उनकी कमजोरी को सहना चाहिए। यहाँ तक की उन भाइयों और दूसरे लोगों के प्रति भी यही सहानुभूति और धीरज दिखाना चाहिए जो बहुत साहसी हैं और प्रभु के कार्यों को करने के लिये खुद से प्रोत्साहित रहते हैं... परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ोतरी हमें धीरज के इस अनुग्रह में भी बढ़ने में सहायता करती है, क्योंकि जितना अधिक से अधिक हम स्वर्गीय पिता के हमारे प्रति धीरज की सराहना करते हैं, यह दूसरों के प्रति उन्हीं सिद्धांतों को लागु करने में हमारी मदद करता है... यह विचार की हमारे स्वर्गीय पिता ने हमपर अनुग्रह किया है और हमें बुलाया है, यह हमें ज्यादा सावधान करना चाहिए की हम इस ऊपरी बुलावे के प्रति प्रभु का कितना सहयोग करते हैं, और जितना सम्भव हो सके हमें दूसरों की सहायता करनी है जो हमारे साथ इस सकेत रास्ते में प्रभु यीशु के पदचिन्हों पर चलने की कोशिश कर रहे हैं। Z.'03-24 R3136:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 अगस्त)

1 थिस्सलुनीकियों 5:18 हर बात में धन्यवाद करो ।

जिनका ह्रदय इस स्थिति में होता है कि, वह प्रभु के साथ संगति में रहे और प्रभु की इच्छा पूरी करने के लिए पूरी तरह से समर्पित हो, वैसे प्रभु के लोग न केवल प्रत्येक दिन की शुरुआत में उनकी आशीषों को पाते हैं, और प्रत्येक दिन के अन्त में उनका धन्यवाद करते हैं, बल्कि जीवन के सभी मामलों में वे यह याद रखना चाहते हैं कि, उन्होंने अपना सब कुछ प्रभु को सौंप दिया है, और विश्वास के द्वारा वे जीवन के सभी मामलों में प्रभु की ओर देखते हैं; - और वे अपने कार्यों के महत्व के अनुपात में, विश्वास के द्वारा, जीवन के सभी हितों के साथ परमेश्वर के प्रावधानों की संगति को महसूस करते हैं, और उसके अनुसार परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। हमारे लिये परमेश्वर की यही इच्छा है; - उनकी इच्छा है कि हम उनकी इच्छा के लिए और उनकी आशीष के लिए लगातार आदर का नजरिया रखें; - और वह हमारे संबंध में ऐसी इच्छा करते हैं, क्योंकि यह सकेत मार्ग में हमारी प्रगति के लिए सबसे अनुकूल स्थिति होगी, और जो हमारे बुलावे और चुनाव को सुनिश्चित करने में हमारी सबसे अच्छी तरह से सहायता करेगी। Z.'03-25 R3136:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 अगस्त)

1 थिस्सलुनीकियों 5:19 आत्मा को न बुझाओ।

प्रभु के लोगों के बीच में प्रभु के लिये और उनके कारणों से जुड़े सभी लोगों के लिये, प्रभु की पवित्र आत्मा की तुलना "प्रेम की पवित्र ज्वाला" से की गई है: यह ज्वाला, हर एक में, जब वे पवित्र आत्मा से उत्पन्न होते हैं, व्यक्तिगत रूप से दिव्य सन्देशे के माध्यम से प्रज्वलित की जाती है, और इसलिये उस पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, सामूहिक रूप से कलीसिया से भी सम्बन्ध रखती है। जिस अनुपात में कलीसिया ज्ञान में और प्रेम में और प्रभु के साथ भाईचारे में बढ़ती है, उसी अनुपात में "पवित्र प्रेम की यह ज्वाला", कलीसिया को जगत की ज्योति बना देती है, - एक ऐसा नगर जो पहाड़ पर बसा हुआ है, जिसे छिपाया नहीं जा सकता। Z.'03-25 R3137:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 अगस्त)

1 थिस्सलुनीकियों 5:21 सब बातों को परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

वे लोग चाहे भविष्यद्वाणी, या सार्वजनिक संदेशा देने के लिये कितना भी आयें, प्रभु के लोगों को उसी अनुपात में यह सीखना चाहिए कि, वे बिना

उचित जाँच और आलोचना के जो कुछ भी सुनते हैं उसे ग्रहण न करें: इन्हें सब कुछ जो वे सुनते हैं, उसे परखना चाहिए, उन्हें अपने मन के भले और बुरे में अंतर करने की क्षमता का अभ्यास करना चाहिए, ताकि वे यह परख सकें, कि कौन से संदेशे तर्कसंगत रूप से ठीक हैं और पवित्रशास्त्र के अनुसार हैं, और कौन से संदेशे केवलमात्र अनुमान हैं और संभवतः कुतर्क है। जो कुछ भी वे सुनते हैं, वह सब उन्हें इस दृष्टिकोण से परखना चाहिए, कि सब कुछ जो दिव्य वचन की परीक्षा पर खरा उतरे और पवित्र आत्मा के अनुसार हो, उसे वे कसकर थामे रहें; और जो कुछ भी इस परीक्षा में खड़ा न रह सके उसको वे तुरंत अस्वीकार कर दें। Z.'03-26 R3137:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 अगस्त)

1 थिस्सलुनीकियों 5:22 सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।

इस वचन में उपदेश यह है कि, हर वह चीज़ जो बुरी है, चाहे वो अच्छे रूप में हो या बुरे रूप में हो, उसका विरोध और इनकार करना है... हर वो चीज़ जो दिखने में बुरी है, उससे दूर रहना एक दूसरा विचार है -- जैसा की प्रेरितों ने वचनों में पहले ही उल्लेख करके चेतावनी दी है, उससे अलग; फिर भी, जो प्रेरितों ने वचनों में व्यक्त किया है, वे खरे सिद्धान्त का

प्रतिनिधितत्व करते हैं। हमें निश्चय ही बुरी चीजों से दूर रहना है, भले ही वो किसी भी रूप में हो, पर हमें उन सब चीज़ों को करने से भी अपने आप को रोके रहना है, जिन्हें हम जानते हैं की वो अच्छी हैं, पर जिसे दूसरे जैसे की हमारे दोस्त या पड़ोसी गलत समझ सकते हैं और उन्हें बुरा समझ सकते हैं। संयम मन की आत्मा हमें यह बताती है की, न ही बुराई हर रूप में, पर सब चीज़ जो देखने में बुरी है, उससे दूर रहना है -- ताकि प्रभु और सच्चाई के लिये हमारा प्रभाव बड़ा हो। Z.'03-26 R3137:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 अगस्त)

प्रेरितों 17:23 इसलिए जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।

प्रेरितों का तरीका, नक़ल करने के योग्य है। सभी बुद्धिमान लोग नवीनता पर अविश्वास करते हैं, और यह कहना पसंद करते हैं कि जो कुछ मूल्यवान है, वह लंबे समय से है। हमें भी प्रेरितों की तरह, ये बताने की कोशिश करनी चाहिए की जो सत्य का सुसमाचार है, वह कोई नया धर्मशास्त्र नहीं है, बल्कि पुराना धर्मशास्त्र है; एक नया सुसमाचार नहीं है, बल्कि पुराना सुसमाचार है,- वह जो पहले से ही अब्राहम को बताया गया

था;... वह जिसकी चर्चा खुद प्रभु यीशु और प्रेरितों के द्वारा की गई थी। जिस अनुपात में हम उपदेशों में गलतियों को अभी के समय में दिखायेंगे, जिसकी उत्पति "अन्धकार के युग" में हुई थी, हमें अवश्य यह भी दिखाना होगा कि, हम एक नए सिद्धांत को समान रूप से त्रुटिपूर्ण नहीं बना रहे हैं, बल्कि हमने अन्धकार के युग की त्रुटियों को त्याग दिया है, और प्रभु और उनके अधिकृत प्रतिनिधियों, प्रेरितों द्वारा घोषित किए गए, सुसमाचार के प्रथम सिद्धांतों और नियमों और शिक्षाओं पर वापस गए हैं। Z.'03-29 R3139:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 अगस्त)

मत्ती 6:33 इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो।

प्रभु के आत्मिक इस्राएली लोग, अपने मन में इस विचार को अच्छे से याद रखने का भरसक प्रयत्न करेंगे की -- उन्हें हर समय आत्मिक रुचियों को प्राथमिकता देनी चाहिए; की सांसारिक मामलों का प्रबंध और नियंत्रण हमेशा आत्मिक मामलों के अनंत कल्याण के दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए; -- आत्मिक बढ़ोतरी और विकास और समृद्धि के दृष्टिकोण से सांसारिक मामलों को देखना चाहिए;- अपने बच्चों के सर्वोत्तम हितों और

उनपर सर्वोत्तम प्रभावों के दृष्टिकोण से सांसारिक मामलों को देखना चाहिए। परमेश्वर के लोगों को न केवल किसी भी सुझाव का पालन करने में हिचकिचाना चाहिए, जो उन्हें और उनके परिवार को प्रतिकूल और भक्तिहीनता के परिवेश में ले जाए, बल्कि उन्हें यह निश्चय करना चाहिए कि किसी भी विचार के तहत, वे इस तरह के सुझाव का पालन नहीं करेंगे, जो उन्हें परमेश्वर के परिवेश से दूर ले जाए; -- पर इसके विपरीत, प्रभु के लोग उनके लोग होने चाहिए, भले इसका मतलब हो, की अभी के वर्त्तमान जीवन में उन्हें कम सुख और सुविधा मिले। Z.'02-350 R3110:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 अगस्त)

लूका 2:49 क्या तुम नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के कामों में लगे रहना अवश्य है?

क्या हम सब में भी अपने स्वामी की आत्मा नहीं होनी चाहिए, जैसा की प्रभु ने इस वचन में व्यक्त किया है? ... प्रभु के सच्चे संतों के पास अपना कोई काम नहीं होता है, क्योंकि वे अपना सब कुछ प्रभु को बपतिस्मा के समय में समर्पित कर चुके हैं। अपने कार्य को वे प्रभु के भण्डारी के रूप में करते हैं -- और उन्हें ऐसा अपनी मृत्यु के बाद बढ़ी

हुई सम्पत्ति को अपने बच्चों या मित्रों को देने के लिये नहीं करना है, संभवतः जिससे कि उनकी कोई आत्मिक हानि हो पाए। भंडारी के द्वारा इसका उपयोग बुद्धिमानी से किया जाना चाहिए, क्योंकि वह जानता है कि मृत्यु से पहले कैसे इसका उपयोग करना है; क्योंकि मृत्यु के बाद उसका भण्डारीपन समाप्त हो जाता है, और उसे निश्चय अपना खाता सौंपना चाहिए। Z.'03-53 R3148:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 अगस्त)

1 कुरिन्थियों 13:13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।

जैसा की प्रेम सबसे सर्वोत्तम है, उसी प्रकार प्रेम सबसे ज्यादा लम्बे समय तक बने रहने वाला गुण है...क्योंकि, क्या विश्वास का कार्य वास्तव में पूरा नहीं हो जाएगा, जब हम आत्मिक में चले जाएंगे और हम देख और पूरी तरह से जान पाएंगे, की हमने अपनी दौड़ पूरी कर ली है? और क्या आशा का कार्य भी वास्तव में पूरा नहीं हो जाएगा, जब हम हमारी आशाओं को और स्वर्गीय पिता के बहुमूल्य वादों को, वारिस के रूप में हमारे पहले पुनरुथान में पूरा होते देखेंगे? लेकिन, प्रेम कभी भी असफल नहीं होगा, क्योंकि प्रेम की कोई शुरुवात नहीं है। परमेश्वर प्रेम हैं, और परमेश्वर की

न कोई शुरुवात है और न कोई अन्त है, इसीलिए प्रेम की भी कोई शुरुवात नहीं है; क्योंकि प्रेम परमेश्वर का एक चरित्र है, स्वभाव है; और जिस प्रकार परमेश्वर लम्बे समय से बने हैं, उसी प्रकार प्रेम भी हमेशा के लिए बना रहेगा। Z.'03-58 R3151:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 अगस्त)

यूहन्ना 17:11 हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर कि वे हमारे समान एक हों।

जैसे हम ऊपर के वचन में प्रभु यीशु की सुन्दर अभिव्यक्ति पर ध्यान करते हैं, जो वे अपनी कलीसिया के सम्बन्ध में व्यक्त करते हैं, हम उस महिमा की एक झलक देखते हैं, जो दिव्य परिवार की आशीषित एकता का है। यह उद्देश्य की एकता, विश्वास की एकता, सहानुभूति की एकता, प्रेम की एकता, आदर की एकता और पारस्पारिक अधिकार की एकता है। इस वचन में प्रभु यीशु मसीह हमें बता रहे हैं, कि, जैसे उनमें और परमपिता में एकता है और हम जो उनके चेलें हैं और उनके दिव्य परिवार का हिस्सा बनेंगे, हम सब में भी वैसी ही एकता होनी चाहिए; और इस एकता की पूर्ति होना ही एक आदर्श उद्देश्य है जिसके बारे में सिखाया जाता है की एकता की महत्वाकांक्षा रखें। Z.'03-77 R3160:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 अगस्त)

1 यूहन्ना 3:2 इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

आइए यह आशा कि हम बहुत जल्द ही पहले पुनरुथान में हमारे बदलाव को अनुभव करेंगे, और हमारे उद्धारकर्ता के समान बना दिये जायेंगे, और उनको वैसा ही देखेंगे जैसा कि वे हैं, और उनके दूसरे आगमन में जब हम उन्हें परमेश्वर के वचन की रौशनी में विश्वास की आँखों से देख पायेंगे (प्रभु यीशु के दूसरे आगमन का महान इफिफेनिया का चरण), या राज्य की महिमा में परमेश्वर के पुत्रों के चमकने के समय में, हम उनकी महिमा में उनके साथ भागी होंगे -- यह सब हमको प्रोत्साहन से भर दे - आइये ये हमारे ह्रदय को ऊर्जा से भर दे, हमारे होंठों को खोल दे, हमें हर एक कर्त्तव्य, विशेषाधिकार और अवसर के लिये मजबूत बना दे - ताकि हम हमारे स्वामी और विश्वास के घराने की सेवा कर सकें। यदि ये आशा प्रभु के लोगों के लिए इतनी सदियों से लंगर बनी रही है, तो यही आशा हमारे लिए कितना मायने रखती है, जब हम हमारे प्रभु यीशु की उपस्थिति के समय में रह रहें हैं, और उनके पूरी महिमा में छोटी झुण्ड के सदस्यों के साथ प्रगट होने (प्रभु यीशु के दूसरे आगमन का महान अपोकलोप्सिस के चरण) का इन्तज़ार कर रहे हैं - जब वे परमेश्वर के राज्य की महिमा में लाखों पवित्रों के साथ प्रगट होंगें! Z.'03-151 R3193:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 अगस्त)

1 कुरिन्थियों 13:4 प्रेम ... कृपालु है।

परमेश्वर के लोगों के लिये यह अनिवार्य नहीं है कि, वे हर गलत काम करने वालों की निंदा करें, जिनसे वे राह चलते मिलते हैं, या न ही उन सभी की निंदा करें जो जान पहचान वाले हैं, जब वे उनमें कुछ कमी पायें। भद्रता हमेशा मसीही चरित्र का एक हिस्सा है। दुनिया के लोगों में भद्रता एक बाहरी दिखावा हो सकता है, लेकिन एक मसीही में यह केवल दिखावा नहीं है, बल्कि उसके ह्रदय की सच्ची भावना को दर्शाता है, जो कि जीवन की आत्मा यानि प्रेम के ऊपर आधारित है। प्रेम सौम्यता, धीरज, दयालुता आदि की ओर ले जाता है, और यहाँ तक की यदि कोई बात न माने, तब भी प्रेम कोई कठोर शब्द कहने में संकोच करेगा, और जहाँ तक उसका कर्तव्य उसे अनुमति देगा, वह कोई भी कठोर बात कहने से अपने आपको रोकेगा। Z.'03-153 R3194:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 अगस्त)

2 कुरिन्थियों 5:16 अतः अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे।

ऊपर के वचन में प्रेरित के कहने का मतलब ये नहीं है की, हमें अपनी शरीर की कमजोरियों पर कोई भी ध्यान नहीं देना हैं, चाहे वह खुद के शरीर की कमजोरियों पर हो या प्रभु यीशु के आत्मिक शरीर के दूसरे सदस्यों की कमजोरियों पर हो। सभी शारीरिक कमजोरियों के विरुद्ध कोशिश करनी है, उस पर जय पाने में, और अक्सर उन शारीरिक कमजोरियों पर जय पाने के लिए हमें शरीर के साथ बहुत ही कठिन बर्ताव करना है, ताकि वो नई सृष्टि के हित में हो। लेकिन फिर भी, हमें नयी सृष्टि और उसके कमजोर नश्वर शरीर के बीच में अंतर करना है, और भाइयों से प्रेम और सहानुभति व्यक्त करना है, जबकि यह हमारे लिए, भाइयों के हित के लिए हो, और कलिसिया के हित के लिए भी हो सकता है, कि भाइयों के गलत तरीकों के प्रति उन्हें डांटे या फटकारें, उनको गलत रास्ते को सही करने के लिए। प्रेरित की परिभाषा के अनुसार, हम दो विभागों के लोगों में अंतर इस प्रकार से कर सकते हैं कि, जो लोग बपतिस्मा लेकर एक नया जीवन पा चुके हैं, वे लोग आत्मा की बातों पर ध्यान देंगे और जो संसार के लोग हैं, जिन्होंने सच्चाई में बपतिस्मा नहीं लिया है, वे लोग शरीर की बातों पर ध्यान देंगे। Z.'03-170 R3202:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 अगस्त)

2 तीमुथियुस 4:2 कि तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह।

इस का मतलब यह नहीं हो सकता है कि, हम तर्क और शालीनता के नियमों का उल्लंघन करते हुए, सुसमाचार को दूसरों को तब सुनाएँ जब वह समय दूसरों के लिये असुविधाजनक और असंगत हो; लेकिन इसका मतलब यह है कि हमें सत्य के प्रति ऐसा प्रेम होना चाहिए, ऐसी सेवा करने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए, कि हम ऐसा करने के अवसर को सहर्ष स्वीकार कर लें, फिर चाहे वह समय हमारे अपने लिए कितना भी असुविधाजनक हो। यह हमारे जीवन का मुख्य व्यवसाय है, स्वयं जीवन भी जिसके अधीन है, और इसलिए, सेवा का कोई भी अवसर अलग नहीं रखा जाना चाहिए। Z.'03-189 R3211:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 अगस्त)

याकूब 4:3 तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो।

आइए हम सही तरीके से प्रार्थना करना सीखें, और सही तरीके से परिश्रम करना आशा रखना भी सीखें; और ऐसा करने के लिए आइए हम सुनने में तत्पर हों, बोलने में धीमा हों, परमेश्वर के वचन को और जो पाठ

परमेश्वर ने हमें पहले ही दे दिया है, और परमेश्वर के हमें सिखाने और हमारा मार्गदर्शन करने और आशीष देने के तरीकों, इन सबको ध्यान से सुनने में तत्पर हों। आइए हम परमेश्वर को हमारी प्राथमिकताओं को बताने में धीमा हों, वास्तव में आइये हम मसीही चरित्र में उन्नति करने के उपायों को खोजें जो हमको यह अनुमति देगा कि, हर समय कि हम अपनी इच्छा करने को नहीं खोजें, पर हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा और उनके मार्गों पर चलने को खोजें। Z.'03-204 R3217:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 अगस्त)

मत्ती 5:16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।

न केवल यह सच होगा कि प्रभु के द्वारा अभिषेक किए हुए लोग दूसरों की तुलना में अधिक बेहतर होंगे, जैसा की श्रेष्ठगीत 5:10 वचन में बताया गया है-- "वह दस हजार में उत्तम है" लेकिन यह भी काफी हद तक सही होना चाहिए कि, वे सभी लोग जो प्रभु यीशु मसीह के शरीर के सदस्यों के साथ, प्रभु यीशु के पूरी दुनिया के सामने राजा के रूप में घोषित किए जाने से पहले, बहुत घनिष्ट रूप से वर्तमान जीवन में जुड़े हुए हैं -- दुनिया के इन लोगों को, प्रभु के लोगों में जिन्हें प्रभु मनुष्यों के मामलों में आदर

देने के लिये चुन रहे हैं, चरित्र की महानता और भव्यता दिखनी चाहिए। दुनिया के ये लोग जो प्रभु के चुने हुए लोगों से अभी के समय में बहुत घनिष्ट हैं, वे प्रभु के लोगों के बारे में जान पाएं की वे प्रभु यीशु के साथ रहे हैं, वे उनका बड़ा ह्रदय देख पाएं, उनकी नैतिक ऊंचाइयों को देख पाएं - परख पाएं की उनमें एक संयम दिमाग की आत्मा है। Z.'03- 206 R3218:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 अगस्त)

दानिय्येल 3:17,18 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे।

यहूदी पुरुषों का नबूकदनेस्सर को दिया गया उत्तर कि, - "हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं", ध्यान देने के योग्य है। उन्होंने न केवल परमेश्वर को स्वीकार किया और उनकी आराधना की, बल्कि उन्होंने अवसर के अनुसार परमेश्वर की सेवा की। आइए, प्रिय भाइयों, हम ये संकल्प लें कि, जैसा इन तीन यहूदी पुरुषों ने किया, वैसे ही हम भी केवल

हमारे प्रभु और परमेश्वर की ही आराधना और सेवा करेंगे - और यह भी संकल्प लें की हम किसी भी दूसरे देवता की उपासना और सेवा नहीं करेंगे, चाहे वो किसी भी या बहुत से रूपों में हो, न ही धन की, न ही धन से जुड़े आकर्षण या प्रतिफल की, न ही प्रसिद्धि की, न ही मित्र की और न ही स्वयं की उपासना और सेवा करेंगे। हमारे प्रभु और सिर ने यह कहा है कि, "परमेश्वर ऐसे आराधकों को ढूंढते हैं जो उनकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे।" Z.'99-172 R2496:6 आमीन